वन उत्पादकता संस्थान, रांची

शहद, गोंद एवं राल प्रसंस्करण एवं विश्लेषण

(Processing and Analysis of Honey, Gum and Resin)

विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण

दिनांक 09.02.2021 से 11.02.2021

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद देहरादून द्वारा प्रायोजित मानव संसाधन विकास योजना के अंतर्गत वन उत्पादकता संस्थान रांची के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने आभासीय मंच के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक ने उद्घाटन संम्बोधन में बाह्य विशेषज्ञों एवं संस्थान के प्रशिक्षकों का स्वागत करते हुए महानिदेशक महोदय का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके निर्देशन में वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा इस श्रृंखला का सातवां(7^{th}) प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का अवसर प्राप्त हुआ तथा वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून; उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर, वन अनुसंधान कौशल विकास केंद्र, छिंदवाड़ा; शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर, वन जैव विविधता संस्थान, हैदराबाद; वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट एवं वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयंबटूर एवं वन उत्पादकता संस्थान,रांची के प्रतिभागियों से महत्वपूर्ण अकाष्ट वन उत्पादों जैसे मधु, राल एवं गोंद के महत्व पर विस्तार से चर्चा की। इन्होने शहद, गोंद एवं राल को वानिकी उत्पाद बताते हुए इनके आजीविका सृजन में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करने हेतु रेखांकित किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम निदेशक श्री एस.एन. वैद्य द्वारा शहद, गोंद एवं राल प्रसंस्करण एवं विश्लेषण (Processing and Analysis of Honey, Gum and Resin) विषय पर दिनांक 09.02.21 से 11.02.21 तक तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन श्रीमती रुबी सुसाना कुजूर वैज्ञानिक सी ने किया एवं प्रशिक्षण पाठ्यक्रम निदेशक श्री एस.एन. वैद्य ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुये प्रशिक्षण के विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया।

प्रथम दिवस भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान, नामकुम, रांची के प्रधान वैज्ञानिक,डा. निरंजन प्रसाद ने राल एवं गोंद के वर्तमान अनुप्रयोगों को विस्तार से बताया तथा डा. नंद किशोर थोबरे, वैज्ञानिक ने गोंद के संग्रहण एवं प्रसंस्करण तथा विभिन्न क्षेत्रो में इसके उपयोग पर चर्चा की एवं इसके भारतीय राजस्व में भूमिका का वर्णन भी किया।

द्वितीय दिवस राम कृष्ण मिशन कृषि विज्ञान केंद्र (KVK) के वैज्ञानिक डा. राजेश कुमार ने मधु संग्रहण प्रसंस्करण एवं विश्लेषण पर चर्चा की तथा इन्होने वृहद रुप से इसके उपयोग के बारे में चर्चा की । वैज्ञानिक डा. राजेश कुमार ने प्राकृतिक एवं कृत्रिम दोनो प्रकार के मधु पालन के तरीको तथा उसके संग्रहण को विस्तार से बताया| मधु की शुद्धता की जांच एवं भारतीय राजस्व में इसकी महत्ता का भी उल्लेख किया।

तृतीय दिवस SHEFEXIL (SEPC) Kolkata के निदेशक श्री सुधाकर कस्तुरे ने राल एवं गोंद के भारतीय तथा विदेशी बाजार एवं व्यापार के विषय के बारे में बताते हुय विदेशों द्वारा गोंद एवं राल की मांग तथा भारत द्वारा आपुर्ति का वर्णन किया। इन्होने बताया कि प्रति वर्ष लगभग 7000 करोड रुपये की विदेशी मुद्रा अर्जित की जा रही है।

संस्थान के श्री बी.डी. पंडित ने लाह उत्पादन के लिए विभिन्न लाह वृक्ष प्रजाति एवं विभिन्न विधियों को बताते हुये इसकी महत्ता एवं प्रकृति संरक्षण में इसके महत्व पर चर्चा की। श्री एस. एन. वैद्य ने लाह से चौरी, चपडा डाई, मोम एव अन्य उत्पाद बनाने तथा इसके महत्व पर विस्तृत रुप में चर्चा की। प्रतिभागियो द्वारा पूछे गये प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर दिया गया। इस अवसर पर संस्थान के समूह समंवयक (अनुसंधान), डा. योगेश्वर मिश्रा एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति रही। श्रीमती रुबी सुसाना कुजूर ने सभी का धन्यवाद करते हुये कार्यक्रम का समापन की घोषणा की। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में विस्तार प्रभाग के श्री एस.एन.वैध, श्री बी.डी.पंडित, श्री सूरज कुमार तथा सेवा एवं सुविधा प्रभाग के श्री बसंत कुमार का प्रमुख योगदान रहा।

शहद, गोंद एवं राल प्रसंस्करण एवं विश्लेषण विषय पर प्रशिक्षण की झलकियां

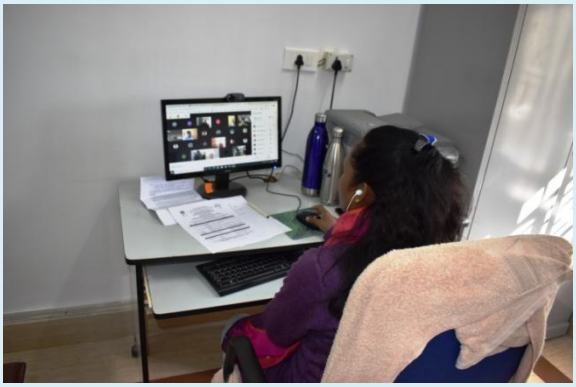

शहद, गोंद एवं राल प्रसंस्करण एवं विश्लेषण विषय पर प्रशिक्षण की झलकियां